परनिंदा

साहित्यशास्त्रियों ने रसों की संख्या दस मानी है। समय बदल गया है। पुरानी मान्यताएँ 'आउट ऑफ डेट' होती जा रही हैं। एक साहित्य के विद्यार्थी से जब पूछा गया, 'तुम्हें सबसे अच्दा रस कौन – सा लगता हे? उसने उत्तर दिया 'गन्ने का रस' – अध्यापक महोदय साहित्य में इस नए रस का नाम सुन कर चुप हो गए। इस प्रकार यदि मुझसे पूछा जाए कि मुझे कौन सा रस सर्वश्रेष्ठ लगता है तो मैं कहूँगा निंदारस। सच पूछिए तो अपना तो ये हाल है कि चाय न मिले, भोजन न मिले, सोने को न मिले, कोई नुकसान नहीं। किंतु यदि दूसरे की निंदा करने का सुअवसर प्राप्त न हो तो हमारा जीवन वीरान हो जाए।

महँगांई के इस ज़माने में यदि सबसे सस्ता एंव सरल मनोरंजन का कोई साधन बचा है तो वह है परनिंदा। इसके लिए न किसी ऑडिटोरियम की आवश्यकता है और न किन्हीं अन्य उपकरण की, न निमंत्रण पत्र छपवाने का झंझट, न सभा सोसाइटी बनाकर चुनाव करने की किल्लत, न मासिक चंदा। कम – से – कम एक श्रोता अवश्य चाहिए और आप निंदारस का पूर्ण आनंद उठा सकते हैं। समय का इसमें कोई पाबंदी नहीं। ताश के पत्ते नहीं तो आप ताश नहीं खेल सकते, कैरम बोर्ड नहीं हो आप कैरम नहीं खेल सकते, परनिंदा खेल में ऐसी कोई बाधा नहीं है।

खेल में राजा और रंक का भेद नहीं माना जाता। परनिंदा के खेल को सभी खेल ही नहीं सकते, खेलते हैं। सभी को अच्छा लगता है। परनिंदा मीठी रोटी है जिधर से तोड़ो उधर से मीठी। सुनने वाला भी मग्न है, निंदक भी रसलीन है।

निंदारस के उद्‌गम तथा विकास पर कोई शोध – ग्रंथ मेरे देखने में नहीं आया। सुना है हाल ही में किसी विश्वविद्यालय में हिंदी साहित्य में 'निंदारस' शीर्षक से एक रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। इस रूपरेखा में वैदिक काल से इसकी परंपरा का संकेत मिलता है। कबीरदास जो सैकड़ों वर्ष पुराने कवि है, संत थे। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वे भी किसी निंदक के सताए हुए थे।

उन्होंने लिखा :

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय,
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।
तिनका कबहूँ न निंदिए, जो पायन तर होय,
कबहूँ उड़ि आँखिन परे, पीर घनेरी होय।

कबीरदास जी तो महात्मा थे। यदि उनका सिद्धांत सब मानते तो निंदा पीछे – पीछे न की जाती। सच पूछा जाए तो निंदा का आनंद परोक्ष में ही होता है। कोई भी निंदक को सादर आमंत्रित करके यह नहीं चाहेगा कि निंदक द्वारा निंदा सुनकर वह अपने मन को निर्मल करे। कबीरदास जी तो तिनके की निंदा करने को भी बुरा समझते हैं किंतु आजकल निंदा के क्षेत्र में नए क्षितिज छुए जा रहे हैं। निंदा करने में लोग अपने 'डैडीजी' को भी नहीं छोड़ते। गुरूजी तो किसी की गिनती में ही नही रहे। एक विद्यार्थी से जब परीक्षा में

फेल होने के कारण पूछा गया तो वह बोला – 'हम तो अपने डैडी की लापरवाही के कारण फेल हो गए।' हमने पूछा – सो कैसे? 'उसने बताया, हम तो परीक्षा दे आए। बाद में डैडी को परीक्षकों के पास जाकर हमारे अंक बढ़वाने थे, ये उन्होंने नहीं किया, इसी का नतीज़ा यह है कि हम फेल हो गए। जिम्मेदार 'डैडी' हुए न? 'हम उनकी मुँह की तरफ़ देखते रह गए।

एक घर में सास दिन – भर के लिए कहीं गई हुई थी। किसी पड़ोसिन को उस घर से कुछ लेना था। सास कभी किसी को कुछ दिया नहीं करती थी। पड़ोसिन चतुर थी। उसने सास की निंदा करना प्रारंभ किया। बहू ऐसी रसमग्न हुई कि उसे चीज़ ही नहीं दी बल्कि अपनी ओर से उसे अनेक उपहार भी दिए और शाम तक बिना कुछ खाए उस पड़ोसिन से सास की बुराई सुनती रही।

हमारे पड़ोसी भी मज़ेदार व्यक्ति हैं। उन्हें सदैव परनिंदा में लीन पाएँगे। यदि परनिंदा में काई विश्व – प्रतियोगिता होती हो तो वे कई पुरस्कार प्राप्त करते। किसी की प्रशंसा सुनना वे पाप समझते हैं। आप किसी की तारीफ करें वे तुरंत कहेंगे – अजी, आज चार पैसे हो गए हैं। बाबूजी पर भूखे मरते थे। कई बार तो इनकी माँ हमारे घर से आटा माँगकर ले गई। इनकी बहिन बारात में बड़े फजीते पड़ जाते अगर हमारे 'डैडी' उन्हें रूपए उधार न देते।

एक दिन मैं और वे कवि सम्मेलन में गए। उन्होंने कई कवियों के मुँह पर उनकी प्रशंसा की। लौटते में उन्होंने सभी कवियों का अभिनंदन करना शुरू किया। उनकी दृष्टि में कोई बनता बहुत था, किसी की आवाज रैंकने जैसी थी, किसी की सूरत पर बारह बज रहे थे, किसी ने किसी दूसरे कवि के भावों का अपहरण किया था, बहरहाल उन्होंने जमकर सबकी निंदा की। मैं अनुभव कर रहा था कि जिस समय वे निंदा करने में मग्न थे। उन्हें ऐसा आनंद आ रहा था, मानों बड़ी रकम की लाटरी उनके नाम से निकल आई हो।

उनकी बैठक एक प्रकार से परनिंदा भवन थी – शाम को अन्य निवेदक भी वहाँ पधारते थे। एक संगीत – समारोह के संयोजक उनकी बैठक में आए। मैं भी उस दिन वहीं था। वे संयोजक से बोले – 'भाई, इस संसार में संयोजक दुर्लभ हैं। धन्य है आप जो दूसरों के मनोरंजन के लिए ऐसा करते है। आज जबकि व्यक्ति अपने में ही सिमटता चला जा रहा है, आप एक अपवाद स्वरूप ही कहे जाएँगे। मैं अवश्य हाजिर हूँगा और मेरे लायक कोई सेवा बताइए।' उन्हें चाय पिलाईं, ज्यों ही वे बैठक से बाहर निकले, फिर क्या था। कहने लगे धंधा बना रखा है लोगों ने। ये संगीत के नाम पर सा रे गा मा भी नहीं जानते लेकिन चल दिए संयोजक बन कर। न कभी चँदे का हिसाब देते हैं। अजी उन्होंने तो इन कर्मों से अपनी हैसियत बनाई है। मैंने उनको टोका भी – भाई साहब उनके सामने तो आप उनकी इतनी तारीफ़ कर रहे थे और उनके जाते है उन पर पिल पड़े। सामने तो मूर्ख कहते हैं और हमारे कहने से क्या होता है। लोग मौज़ उड़ाएँ और हम ज़बान से भी न कहें।' मैंने यह अनुभव किया कि वे जब किसी की निंदा करते हैं तो तटस्थ भाव से करतें हैं। आवश्यक नहीं कि जिसकी वे बुराई कर रहे हैं। किसी का दिल दुखाना उनका उद्देश्य नहीं। कई बार वे अपनी इस आदत के कारण परेशानी में भी पड़ चुके हैं। अपने पड़ोस में रहने वाली एक प्रौढ़ बुआजी के बारे में उन्होंने ऐसे ही कुछ कह दिया। वे घर पर चढ़ आईं और लगीं इनकों

धमकाने। काफी आदमी भी जुड़ गए। जिनसे उन्होंने बुआजी की बुराई की थी, वह भी साक्षी के रूप में उपस्थित थे। भाईजान रंगे हाथों पकड़े गए थे। बचते तो कैसे? बड़ी मुश्किल में लोगों ने माफी मँगवाकर उनका पिंड छुड़वाया। कुछ दिनों तक सावधानी बरती। फिर वही रफ़्तार।

एक दिन ऐसा हुआ कि वे सार्वजनिक रूप से अपनी सास की निंदा कर रहे थें वे इनसे कितनी बेगार कराती हैं, उनका कैसा चिड़चिड़ा स्वभाव है, कैसी लोभिन हैं आदि – आदि। किसी ने सही कहा है कि दीवारों के भी कान होते हैं बैठक में सभी प्रकार के लोग जमते है। किसी ने उनकी श्रीमती से सब बातें कह दी।

सुबह – सुबह मेरे घर आए और परेशानी की हालत में बोले, 'भाई, क्या बताऊँ, ऐसी बुरी बात पड़ गई है। मैंने मज़ाक – मज़ाक में अपनी सासजी के बारे में कुछ कह दिया था। किसी भिड़ाने वाले ने और नमक – मिर्च लगाकर श्रीमती जी से कह दिया है। कल दिन – भर घर में खाना नहीं बना। और शाम को उन्होंने सब सामान भी पैक कर लिया है और मायके जाने की तैयारी कर रही हैं। भाई, तुम्हीं चलों, कुछ हो सके तो इस मामले को समाप्त कराओ। 'मैंने कहा,' यार आज पहली बार है। क्यों नहीं अपनी जबान पर काबू रखते हैं। मन बहलाने के और भी अनेक साधन हैं, क्या दूसरें को निंदा करने के अतिरिक्त तुम्हारा मनोरंजन और किसी साधन से नहीं हो सकता। भाई, मर्द का कोई मामला होता मैं चला चलता, मियाँ बीबी के झगड़े में पड़ूँ इतने बाल मेरे सिर में नहीं है। बहुत मिन्नत करने पर मैं उनके साथ चला गया।

श्रीमती जी के चेहरे पर ऐसी लाली थी कि जेठ की मास को दोपहर में सूर्य को होती है। मैंने कहा, 'भाभी जी, नमस्ते!' उन्होंने बहुत ही औपचारिक रूप से नमस्ते कहा, मेरी हिम्मत नहीं पड़ रही थी। समझ में नहीं आता था कि बातचीत किस ढंग से शुरू की जाए। ख़ैर साहब! किसी प्रकार मैंने साहस करके बातचीत प्रारंभ की। वे तो भरी हुई बैठी थीं, उबल पड़ी 'आख़िर बूढ़े होने की आस, अब तक तो बाहरवालों की निंदा ही किया करते थे। अब घरवालों का भी नंबर आ गया। क्यों कोई अपने माँ – बाप की बुराई सुनेगा? और वह भी बिना किसी कारण के। भाई साहब, नित्य ही निंदा करने के कारण इनकी दुर्गति होती है ओर ये हैं कि इस आदत को नहीं छोड़ते। अब तो पड़ोसियों ने बोलचाल बंद कर रखी है। जिसकी देखो बुराई। मेरे बहुत समझाने – बुझाने पर उनका गुस्सा उतरा।

उन्होंने श्रीमती जी के सामने प्रतिज्ञा की कि वे किसी की निंदा नहीं करेंगे। लेकिन मूझे पूर्ण विश्वास है कि वे शीघ्रातिशीघ्र किसी की निंदा करेंगे क्योंकि वे निंदा को ही रसराज मानते हैं।

– बरसाने लाल चतुर्वेदी

शब्दार्थ :-

संयोजक	:	सभा – समितियों का प्रबंध करने वाला
दुर्लभ	:	कठिनता से प्राप्त होने वाला
अपवाद	:	सामान्य नियम से भिन्न
चँदा	:	सार्वजनिक कार्य हेतु दी जाने वाली आर्थिक सहायता
पिल पड़ना	:	भिड़ जाना, पूरी शक्ति से कार्य में लगना
तटस्थ	:	किसी का पक्ष न लेने वाला
साक्षी	:	गवाही देने वाला
सार्वजनिक	:	सबके काम आने वाला, सबसे संबंध रखने वाला
बेगार	:	बिना मजदूरी के बलपूर्वक करवाया जाने वाला काम
औपचारिक	:	रस्मी, दिखावटी
प्रतिज्ञा	:	वादा, दृढ़ संकल्प

१) लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि यह एक ऐसा अनकहा सत्य है, जो किसी भी दुष्टिकोण से लाभकारी नहीं है?

२) परनिंदा ऐसा खेल है जिसमें किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं ओर न ही समय की कोई पाबंदी है, स्पष्ट करें।

३) इस पाठ में लेखक ने कई जगह व्यंग्पूर्ण वाक्य लिखा है किन्ही चार का उल्लेख करें।

४) कवि सम्मेलन से लौटते समय लेखक के पड़ोसी ने कवियों के प्रति क्या विचार व्यक्त किये?

५) 'परनिंदा भवन' किसे कहा गया है वहाँ क्या होता था?

६) लेखक के पड़ोसी कब परेशानी में पड़ गए? कैसे उन्हे परेशानी से मुक्ति मिली?

७) आशय स्पष्ट करें।

क) परनिंदा मीठी रोटी है जिधर से तोड़ो उधर से मीठी।

ख) सच पूछिए तो यदि दूसरे की निंदा करने का सुअवसर प्राप्त न हो तो हमारा जीवन वीरान हो जाए।